

काछबा काछबी रि कथा

काछबो न काछबी रहता समंद में , लेता हरि रो नाम
भक्ति रे कारण बाहर आया , कीन्हा संतो ने प्रणाम
संतो रे शरणे पड़िया जी , झटक झोड़ी में भरिया जी
कळप मत काछब कूड़ी ओ , सांवरिया री रीतां रुड़ी ओ
भक्ति रो भेद नी पायो जी , सांवरियो नेचे आयो जी

संत लेय हांडी में धरिया , तळे लगाई आग
केवे काछबी सुण रे काछबा , थांरे हरी नें बताय
कठे थांरो सारंग प्राणी रे , मौत री आ ही निशाणी रे
भक्ति रो भेद नी पायो जी , सांवरियो नेचे आयो जी

आडी जळूं मैं ऊबी जळूं रे , जळ गई जालोजाल
कदे नी आवे सांवरो थांरो , प्राण निकल्यो जाय
कठे थांरो मोहन प्राणी रे , मीठोड़ी मुरली वाणी रे
कळप मत काछब कूड़ी ओ , सांवरिया री रीतां रुड़ी ओ

बळती होवे तो बैठ ज्या पीठ पर , राखूं थांरो प्राण
निंद्रा मत कर म्हारे नाथ री , राखूं थांरो प्राण
हरी म्हारो आसी वारुं रे , जीवों ने तारण वालो रे
कळप मत काछब कूड़ी रे , सांवरिया री रीतां रुड़ी रे

काची नींद में सूतो सांवरो , मोड़ी सुणी रे पुकार
बळती अगन सूं तारिया जी , काछब नें किरतार
वाणी भोजो जी गावे रे , टीकम दा राय बतावे रे
लहरी मेहरा गाय सुणावे रे , चँचल भाई म्युजिक बजावे रे
कळप मत काछब कूड़ी रे , सांवरिया री रीतां रुड़ी रे

<https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/12495/title/kachba-kachbi-ri-katha>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले।